International Journal of Home Science 2024; 10(3): 485-488

ISSN: 2395-7476
IJHS 2024; 10(3): 485-488
© 2024 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 22-10-2024
Accepted: 25-11-2024

डॉ. रेनु बोस
वरिये व्याख्याता,स्नात्तकोतर
गृहविज्ञान विभाग, वि.भा.
विश्वविद्यालय, हजारीगाग, झारखंड,
भारत

Corresponding Author:
डॉ. रेनु बोस
वरिये व्याख्याता,स्नात्तकोतर
गृहविज्ञान विभाग, वि.भा.
विश्वविद्यालय, हजारीगाग, झारखंड,
भारत

वस्त्र उद्योग में परिधान एवं साडीयाँ

रेनु बोस

सारांश
कपड़ें बुनाई की कला 2800–1800 ईसा पूर्व के दौरान मेसोपोटामियन सभ्यता से भारत आई थी। वैसे तो समकालीन सिंधु घाटी सभ्यता सूती कपड़ें से परिचित थे और वस्त्र के रूप में लंगोट जैसे कपड़ें का इस्तेमाल करते थे क्योंकि पुरातात्विक सर्वेक्षण के दौरान कपास के कुछ अवशेष, सिंधु से प्राप्त हुये हैं लेकिन बुनाई की कला का साक्ष्य अब तक नहीं मिला है। महिलाओं के लिए एक साड़ी या साड़ी भारतीय उपमहाद्वीप में एक महिला परिधान है। लहंगा–चोली, स्कर्ट और ब्लाउज, सलवार–कमीज, अनारकली सूट, पत्तु पवदै आदि। पुरूष कपड़ें, धोती गम्छे य। भारतीय साड़ी आमतौर पर लाल या गुलाबी, एक पंरपरा है कि वापस पूर्व–आधुनिक भारत के इतिहास के लिए जाना जाता है। साड़ी आमतौर स्थानों में अलग अलग नामों से जाने जातें है। लुंगी, अचकनी/शेरवानी अँगरखा, शब्द अँगरखा संस्कृत शब्द जामा टोपी मैसूर पेटा राजस्थानी साफा गांधी टोपी आदि।

कुटशब्दः साड़ी महिलाओं,, परिधान, लुंगी,अचकन/शेरवानी, अँगरखा

प्रस्तावना
कुछ इतिहासकारों का मानना है कि कपड़ें बुनाई की कला 2800–1800 ईसा पूर्व के दौरान मेसोपोटामियन सभ्यता से भारत आई थी। वैसे तो समकालीन सिंधु घाटी सभ्यता सूती कपड़ें से परिचित थे और वस्त्र के रूप में लंगोट जैसा कपड़ें का इस्तेमाल करते थे क्योंकि पुरातात्विक सर्वेक्षण के दौरान कपास के कुछ अवशेष, सिंधु से प्राप्त हुये हैं लेकिन बुनाई की कला का साक्ष्य अब तक नहीं मिला है। 1500 ईसा पूर्व के बाद जब भारत में आर्यों का आगमन हुआ तो पहली बार उन्होंने ही वस्त्र शब्द का इस्तेमाल किया था जिसका अर्थ उनके लिए पहनने योग्य चमड़ें का एक टुकड़ा था।
भारत में वस्त्र उद्योग का क्षेत्र सबसे अधिक प्रभावशाली है। भारत में वस्त्र उद्योग, क्षेत्र के साथ–साथ जातीयताओं, भौगोलिक संरचनाॉ, जलवायु और सांसकृतिक परम्पराओं के साथ विविध होता है। ऐतिहासिक रूप से भारत में बहुत विविधता हैं। वस्त्र कौपीना अचकनॉ लंगोंटा लुंगी साडी जैसे साधारण परिधानों एवं शहरी क्षेत्रो में पश्चिमी वस्त्र आम हैं। समाज के सभी वर्गो द्वारा पहने जातें हैं। कभी–कभीं अपने धर्म के अनुसार भी लोग एक परिधान के लिए कोड निंधारित करतें हैं। भारत मे वस्त्र कढाई,प्रिंट,हस्तकला,अलंकरण, और वस्त्र पहनने की शैलियों की एक विस्तृत विविधता भी पाई जाती है। परिधान का इतिहास बहुत पुराना है। कश्मीर अपने विशिष्ट सुन्दर शालों के लिए विश्व भर में प्रशिद्ध हैं। शहतुत का पौधा अपने रेशम के लिए जाना जाता है। महिलाओं के लिए एक साड़ी या साड़ी भारतीय उपमहाद्वीप में एक महिला परिधान है। लहंगा–चोली, स्कर्ट और ब्लाउज, सलवार–कमीज, अनारकली सूट, पत्तु पवदै आदि। भारत में आजकल महिलाओं के कपड़ों से मिलकर बनता है जैसे गाउन, पैंट शर्ट और टॉप दोनों औपचारिक और अनौपचारिक पहनने का। कुर्ती जैसे पारंपरिक भारतीय कपड़ें आरामदायक पोशाक का एक हिस्सा जीन्स के साथ संयुक्त किया गया है। भारत में फैशन डिजाइनर समकालीन भारतीय फैशन की एक अनूठी शैली बनाने के लिए पारंपरिक पश्चिमी पहनने में भारतीय पारम्परिक डिजाइनों के ई तत्वों के मिश्रित हैं।
पुरूष कपड़ें, धोती गम्छे या लुंगी,अचकन/शेरवानी अँगरखा, शब्द अँगरखा संस्कृत शब्द जामा टोपी मैसूर पेटा राजस्थानी साफा गांधी टोपी आदि । पुरूषों के लिए, पारंपरिक कपड़े अचकन/शेरवानी गलाला, बन्धगल, लुंगी, कुर्ता, अँगरखा, जामा और धोती या पायजामा हैं। साथ ही, हाल हीं में पैंट और शर्ट पांरपरिक भारतीय पोशाक के रूप में भारत सरकार द्वारा स्वीकार कर लिया गया है।

तथ्य विश्लेषण
महिलाओं के वस्त्र एवं उसकी लोकप्रियेता, उत्तर और पूर्व में महिलाओं के लिए पारंपरिक भारतीय वस्त्र साड़ी चोलि टॉप के साथ पहनते रहे हैं:,

एक लंबी स्कर्ट एक लहंगा या चोलि और एक पहनावा एक घाघरा चोलि लिए एक दुपट्टा के साथ पहना जाता हैः या सलवार कमीज सूट, जबकि दक्षिण भारतीय महिलाओं के कई पारंपरिक रूप से साड़ी पहनने का रिवाज है। महिला एक साड़ी, रंगीन कपड़ें, एक साधारण या फैंसी ब्लाउज पर लिपटी की एक लंबी चादर पहनते भारत के पश्चिमी वस्त्र पश्चिमी और उपमहाद्वीप फैशन का फ्यूजन है। ठिगने, गम्छा, कुर्ती और कुर्ता और शेरवानी गरारा अन्य कपड़े शामिल हैं।

एक साड़ी या साड़ी भारतीय उपमहाद्वीप में एक महिला परिधान है। मेखेल चादोर जो शरीर के चारों ओर लिपटी हैं कपड़े के तीन मुख्य टुकड़ें हैं। नीचे हिस्से, कमर से नीचे की तरफ लिपटी मेखला कहा जहाता है। (असमियाः) है पारंपरिक असमिया पोशाक महिलाओं द्वारा पहना जाता है।

सलवार कमीज, सलवार का कम परिधान पंजाबी सलवार, सिंधी सुथन, डोगरी पजम्म (सुथन भी कहा जाता है।) और कश्मारी सुथन को शामिल एक सामान्य वर्णन है। सलवार कमीज पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में महिलाओं के पारंपरिक वस्त्र है और जो भारत (पंजाब क्षेत्र) के उत्तर–पश्चिमी भाग में सबसे आम है पंचाबी सूट कहा जाता है। पंचाबी सूट भी शामिल है ''छुड़ीदार '' और ''कुर्ता'' पहनावा '' जो भी दक्षिणी जहां यह '' छुड़ीदार '' रूप में जाना जाता है भारत में लोकप्रिय है।

सुथन, सलवार को इसी तरह सिंध जहाँ यह चोलो के साथ पहना जाता है और फिरन के साथ कशमीर में आम है। कश्मीरी फिरन डोगरी प्यजामा के साथ पहना जाता है। पटियाला सलवार, अपनी ढीली चुन्नट तल पर एक साथ मिले एक अतिरंजना के व्यापक संस्करण।

अनारकली सूटः अनारकली सूट का एक लंबा, फ्रॉक शैली शीर्ष से बना होता है और एक स्लिम फिट नीचे जैसी सुविधाएँ होती है। अनारकली स्थित उत्तरी भारत, पाकिस्तान और मध्य पूर्व में महिलाओं द्वारा अच्छी तरह से पारंपरिक त्योहारों, वर्ष गांठ समारोह आदि जैसे विभिन्न अन्य अवसरों पर पहनते हैं।

लहंगा चोली (स्कर्ट और ब्लाउज): लहंगा चोली राजस्थान और गुजरात में महिलाओं के पारंपरिक कपड़ें है। पंजाबी भी उन्हें पहनते हैं। एक लहंगा एक लंबी स्कर्ट जो चुन्नट का एक रूप है। यह आमतौर पर कढ़ाई है या निचले भाग पर एक मोटी बार्डर है। एक चोली एक ब्लाउज, परिधान जो शरीर को फिट करने के लिए कम आस्तीन और कम गर्दन वाला होता है।

पत्तु पवदैः पत्तु पवदै या लन्गा दवनि एक पारंपरिक पोशाक में दक्षिण भारत और राजस्थान, आम तौर पर किशोर और छोटी लड़कियों द्वारा पहना जाता है। पवद एक शंकु के आकार का स्कर्ट, आम तौर पर रेशम, कि नीचे कमर से पैर की उंगलियों के लिए हैंग हो जाता है। यह आम तौर पर निचले भाग में एक गोल्डन बॉडर है।

पुरूष कपड़ें

पुरूषों के लिए, पारंपरिक कपड़े अचकन/शेरवानी गलाला, बन्धगल, लुंगी, कुर्ता, अँगरखा, जामा और धोती या पायजामा हैं। साथ ही, हाल हीं में पैंट और शर्ट पारंपरिक भारतीय पोशाक के रूप में भारत सरकार द्वारा स्वीकार कर लिया गया है।

धोती, चार से छह फुट लंबे सफेद या रंगीन पट्टी कपास की धोती है। इस पारंपरिक पोशाक मुख्य रूप में गाँवों में पुरूषों द्वारा पहना जाता है। यह लपेटन के और कभी कभी एक बेल्ट, सजावटी और कढ़ाई या एक फ्लैट और सरल एक है, कमर के आसपास की मदद से एक शैली द्वारा जगह में आयोजित किया जाता है। कपड़े की शीट की तरह लंबे, सफेद हिंदेशियन वस्त्र पहनते हैं। यह मराठी में धोतर कहा जाता है। उत्तरी और मध्य भारतीय भाषाओं जैसे हिन्दी, ओड़िया, ये मुन्दु, जबकि तेलुगु भाषा में वे पंच कहा जाता हैं, तमिल में वे वेश्ति कहा जाता है और कन्नड़ में यह पन्छे/लुगी कहा जाता है कहा जाता है। धोती ऊपर, पुरूष शर्ट पहनते हैं।

पन्छे या लुंगी, के रूप में भी जाना जाता हिंदेशियन वस्त्र, भारत का एक पारंपरिक परिधान है। एक लुंगी, मुन्दु है सिवाय इसके कि यह हमेशा सफेद है। यह या तो कमर, घुटनों, तक की लंबाई पर जाल है या टखने तक पहुँचने की अनुमति है। आम तौर पर जब व्यक्ति, फील्डस या कार्यशालाओं, में काम कर रहा है, में जाल है और सम्मान, पूजा स्थानों या जब व्यक्ति है गणमान्य व्यक्ति के आसपास का चिन्ह सूती सिल्क, के एक सादे पत्राक है।लुंगी, आम तौर पर, दो प्रकार के होते हैंः ओपन लुंगी और सिले लुंगी। हालांकि ज्यादातर पुरूषों द्वारा पहना, बुजुर्ग महिलाओं भी लुंगी अपनी अच्छी वातन कारण अन्य कपड़ों को पंसद करते हैं। बांग्लादेश, ब्रुनेई, इंडोनेशिया, मलेशिया, म्यांमार और सोमलिया के लोग भी लुगी में, गर्मी और आर्द्रता के कारण पहना जाता है, हांलांकि ज्यादातर दक्षिण भारत में लोकिप्रिय है।

अचकन/शेरवानी गलाल लंबे कोट है। एक अचकन या एक शेरवानी गलाला/आमतौर जैकेट बटन की लंबाई के माध्यम से सिर्फ घुटनों के नीचे । जैकेट एक नेहरू कॉलर, जो खड़ा एक कॉलर है। अचकन तंग फिटिग पैंट या पतलून चुरिदर के साथ पहना जाता है। चुरिदार पतलून जो कूल्हों और जांघों के आसपास ढीली लेकिन टखने के आसपास इकेटठ् रहते हैं। अचकन आमतौर पर शादी समारोह के दौरान दूल्हे द्वारा पहना जाता है। और आम तौर पर क्रीम, हल्के आइवरी, या स्वर्ण रंग के होतें है। जिनका सीने या चांदी के साथ कशीदाकारी होता है।

अँगरखा, शब्द अँगरखा संस्कृत शब्द अँगरखाकस, जिसका शरीर की रक्षा के अर्थ से ली गई है। अँगरखा में विभिन्न भागों भारतीय उपमहाद्वीप के, लेकिन बुनियादी कट ही, शैलियों और लंबाई क्षेत्र से विविधरू् के बने एक पारंपरिक उपरी परिधान, भारतीय उपमाहद्वीप में पहना जाता है।

मैसूर पेटा, मूल रूप से मैसूर के राजाओं ने दरबार में और त्योहारों के दौरान औपचारिक जुलूस में औपचारिक मीटिग, और विदेशी गणमान्य व्यक्तियों के साथ बैठक के दौरान पहना, जाता है।

राजस्थानी साफा, राजस्थान में पगड़ियां पगरि या साफा कहा जाता हैं। वे विशिष्ट शैली और रंग में कर रहे हैं, और जाति, सामाजिक वर्ग और पहनने के क्षेत्र से संकेल मिलता है।

23वीं सदी के मोड़ से ठेठ शहरी भारतीय जनसंख्या के लिए कपड़ों की एक अनूठी शैली बनाना दोनों पश्चिमी और भारतीय कपड़ें अंतर्मिश्रण था। महिलाओं और अधिक आरामदायक कपड़ों और अतंरराष्ट्रीय फैशन। आर्थिक उदारीकरण के बाद और अधिक रोजगार खोल दिया, और औपचारिक पहनने के लिए एक मांग बनाया। महिलाओं के काम करने के लिए या तो पश्चिमी या पांपरिक पोशाक पहनने के लिए पंसद है, जबकि ज्यादातर भारतीय बहुराष्ट्रीय कंपनियों का कहना है कि पुरुष कर्मचारी पश्चिमी पोशाक पहनने।

साड़ीः भारतीय उपमहाद्वीप में एक महिला परिधान है। सम्बल्पुरि से पूर्व, मैसूर सिल्क और इल्कल कर्नाटक आणि, कांचीपुरम तमिलनाडु के दक्षिण से, पैथन पश्चिम से और दुसरों के बीच उत्तर से बनारसी साड़ी। एक साड़ी से नौ मीटर लंबाई, जो विभिन्न्न शैलियों में शरीर पर लिपटी है में लेकर बिना सिले कपड़ें की एक पट्टी है। महिलाओं आम तौर पर पूर्ण साड़ी पहनतीं हैं। भारतीय साड़ी आमतौर पर लाल या गुलाबी, एक पंरपरा है कि वापस पूर्व–आधुनिक भारत के इतिहास के लिए जाना जाता है।

साड़ी आमतौर स्थानों में अलग अलग नामों से जानें जाजें है। केरल, गोल्डन बॉर्डर, के साथ सफेद साड़ी में कवनि के रूप में जाना जाता । साड़ी पुदवै तमिलनाडु में कहा जाता है। कर्नाटक में, साड़ी सीरे कहा जाता है। हथकरघा साड़ी के पारंपरिक उत्पादन में ग्रामीण आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है। मुन्दुम नेरियथुम साड़ी जो केवल एक पांरपरिक पोशाक केरल, दक्षिण

भारत में महिलाओं के शरीर के निचले हिस्से को कवर के प्राचीन रूप सबसे पुराना अवशेष है। मुन्दु मूल पारंपरिक टुकड़ा है या कम परिधान साड़ी का प्राचीन रूप है ।
सम्बल्पुरि से पूर्व, मैसूर सिल्क और इल्कल कर्नाटक आणि, कांचीपुरम तमिलनाडु के दिक्षण से, पैथन पश्चिम से और दुसरों के बीच उत्तर से बनारसी साड़ी यह उम्र की महिलाओं द्वारा पहना जाता

समाज के साथ साड़ियों में आए परिवर्तन

रेशमी साड़ियों का मॉर्डन स्टाइल मुगलों ने इजाद किया, मुगलों को शानदार चमकीले स्टाइल और फैशन का शौक था। वे सिलाई की कला में स्किल्ड थे और रेशमी कपड़े उनके फेवरेट थे। रेशमी साड़ियों मॉर्डन स्टाइल की ऑरिजन इसी से शुरू हुआ। इस टाइम के दौरान कपड़ें के लिए पांच सौ से अधिक नैचुरल कलर मौजूद थे।
आज के भारत में साड़ियों, भारत में साड़ियों अनुमानित 30 से अधिक रीजनल किस्में है। बनारस की साड़ी तो देश के साथ ही विदेशों में भी महिलाओं के लिए आकर्षण होती है। चमकीले कलर, सोने, चांदी और ताबें के धागों से इसमें डिजाइन बनाया जाता है। ये दुल्हनों के लिए स्पेशली तैयार की जाती है।
जामदानी, वाराणसी का कसिका वस्त्र बूटीदार और इल्कल साड़ी। रेशम के ब्रोकेड सोने और चांदी के धागों से बनाये जाते थे। मुगलों ने कला को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, और पैस्ले और लतीफा बुटी मुगल प्रभाव के उदाहरण हैं।
भारत में दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व से ही रंगाई की तकनीक प्रचलित थी प्रतिरोधी रंगाई और कलमकारी तकनीक बेहद लोकप्रिय थीं।
पैठणी साड़ी, दोस्तों, आपने पैठणी साड़ियों का नाम जरूर सुना होग.....इन साड़ियों को बनवाने का श्रेय मराठवाड़ा के प्रसिद्ध सातवाहन शासक शालिवाहन को जाता है जो 2000 साल पहले भारत के कुछ हिस्सों पर रांज करते थे. पैठण्णी साड़ी को बनाने में चीन के बेहतरीन रेशम के धागों और शुद्ध जरी का उपयोग होता था।
इसके बाद गुप्ता वंश से लेकर मेडिवल पीरियड तक यानी मुघलों के आने से पहले तक साड़ी बनाने और पहनने के ढंग में कई बदलाव आये, कपड़ों की बुनाई करने के नए तरीके इजात किये गए, नए–नए रंगो का इस्तेमाल होने लगा। रीजनल आर्ट कढ़ाई के रूप में साड़ियों पर उकेरी जाने लगी, कीमती पत्थर जड़ें जाने लगे।
बंधनी या बंधेज साड़ियो को आज भी शौक से पहना जाता है उनका आविष्कार सातवी शताब्दी में राजा हर्षवर्धन के काल में गुजरात में हुआ था। इन साड़ियों को बनाने के लिए कपड़ें को एक विशेष पैटर्न में बाँध कर डाई किया जाता था। ूदर देश से आने वाले व्यापारी इस कला को भारत लेकर आये थे।

मुगलिया काल सिलाई और बुनाई का दौर/बनारसी सांड़ियों का इतिहास

अकबर, जहांगीर और शाहजहाँ जैसे मुगल सम्राट उत्कृष्ट शिल्प कौशल को काफी बढ़ावा देते थे। कहते हैं कि औरगजेब जैसा क्रूर मुगल शाशक भी पैठणी साड़ियों का दीवाना था और उसने पैठणी बुनकरों से एक नई विधा औरंगजेबी भी शुरू करवाई थी, इन सम्राटों को खुश करने के लिए कारीगारों ने साड़ियों को लेकर भी खूब प्रयोग किये और एक से एक कीमती फैब्रिक, कढ़ाई करने के तरीके इजात करने लगे।ऋषि मार्कड के वशंज कांचीपुरम में आकर बसे 400 साल पहले उन्ही ने विजयनगर साम्राज्य के राजा कृष्णदेव राय के काल में कांजीवरम सांड़ियों का निमार्ण किये जो आज भारत की सबसे महंगी साड़ियों में एक हैं।
मुगलों के पतन के बाद सत्रहवीं शताब्दी में, फिर 1818 में कोलकाता में भारत की पहली टेक्सटाइल मिल लगाई गई। इनमें पॉवर लूम्स का इस्तेमाल होने लगा। लेकिन सही मायने में भारत में टेक्सटाइल इंडस्ट्री की शुरूआत 1850 के दशक में हुई, जब एक पारसी कॉटन मर्चेट ने 1854 बॉम्बे में कॉटन मिल के सेठ शिव नारायण बिड़ला ने इसी समय कॉटन ट्रेडिंग का काम शुरू किया।
1870 के दशक में जमशेदजी टाटा ने मुबंई के चिंचपोकली में बंद हो चुकी आयल मिल खरीदी और उसे कॉटन मिल में बदल दिया धीरे धीरे सन 1900 आते आते सूरत कोलकाता, मुंबई, अहमदाबाद समेत भारत के कई शहरों में कुल 178 टेक्साटाइल मिल्स रन करने लगी।
जो साड़ियाँ हाथों से बनाई जाती थीं अब इन मिलों में भी बनने लगीं। बल्क प्रोडक्शन होने लगा.....लाखों लोगों को रोजगार मिलने लगा..... लेकिन इसका एक दुष्परिणाम भी हुआ.....हाथ से काम करने वाले कारीगरों का काम छिनने लगा और सदियों पुराने हाथ से साड़ी बनाने की कला धीरे–धीरे खतरे में पड़ गई और आज ऐसे प्रतिभाशाली कारीगर बस मुट्ठीभर रह गए हैं।
1940 के दशक मे पॉलिएसट्र नायलॉन और रेयान जैसे सिंथेटिक फाइबर चलन में आ गए और सांड़ियाँ बनाने में भी इनका इस्तेमाल होने लगा। आधुनिक मशीनों और नए फाइबर्स के संगम से कम दाम और अधिक मात्रा में साड़ियाँ बनने लगीं, बेल डाईग, बीम डाईंग, चेन डाईग, क्रॉस डाईग, जैसे फ्रेबरीक डाईंग के नए तरीके भी आ गए।
डिजिटल प्रिंटिग की आधुनिक मशीनों से साड़ियों पर कुछ भी प्रिंट करना एक बटन क्लिक करने जितना आसान हो गया। सचमुच साड़ियों का सफर कहां से शुरू हो कर कहाँ पहुचँ गया। रामायण–महाभारत काल से पहनी जा रही साड़ियों का बाजार आज 80 हजार करोड़ रू का हो चुका है। बॉलीवुड हिरोइनस से लेकर हॉलीवुड की सेलिब्रिटीज तक साड़ियाँ पहन रही हैं।
आज कभी नीता अम्बानी की 40 लाख रूपये की विवाहिक साड़ियाँ सुर्खियों में छाई रहती है, तो कभी एक साड़ी पहनाने का 2 लाख रूपये चार्ज करने वाली डॉली जैन खबरों में आ जाती है।

निर्ष्कष

कपड़ें बुनाई की कला 2800–1800 ईसा पूर्व के दौरान मेसोपोटामियन सभ्यता से भारत आई थी। वैसे तो समकालीन सिंधु घाटी सभ्यता सूती कपड़ें से परिचित थे और वस्त्र के रूप में लंगोट जैसा कपड़ें का इस्तेमाल करते थे क्योंकि पुरातात्विक सर्वेक्षण के दौरान कपास के कुछ अवशेष, सिंधु से प्राप्त हुये हैं लेकिन बुनाई की कला का साक्ष्य अब तक नहीं मिला है। महिलाओं के लिए एक साड़ी या साड़ी भारतीय उपमहाद्वीप में एक महिला परिधान है। लहंगा–चोली, स्कर्ट और ब्लाउज, सलवार–कमीज, अनारकली सूट, पत्तु पवदै आदि। भारत में आजकल महिलाओं के कपड़ों से मिलकर बनता है जैसे गाउन, पैंट शर्ट और टॉप दोनों औपचारिक और अनौपचारिक पहनने का। कुर्ती जैसे पारंपरिक भारतीय कपड़ें आरामदायक पोशाक का एक हिस्सा जीन्स के साथ संयुक्त किया गया है।
पुरूष कपड़ें, धोती गम्छे या लुंगी,अचकन/शेरवानी अँगरखा, शब्द अँगरखा संस्कृत शब्द जामा टोपी मैसूर पेटा राजस्थानी साफा गांधी टोपी आदि । पुरूषों के लिए, पारंपरिक कपड़े अचकन/शेरवानी गलाला, बन्धगल, लुंगी, कुर्ता, अँगरखा, जामा और धोती या पायजामा हैं। साथ ही, हाल की में पैंट और शर्ट पांरपरिक भारतीय पोशाक के रूप में भारत सरकार द्वारा स्वीकार कर लिया गया है।
साड़ियाँ भारतीय संस्कृति का अटूट हिस्सा हैं और अजमेरा फैशन में हम साड़ियों को सिर्फ एक वस्त्र के रूप में नहीं देखते हम इसे एक ऐसे सशक्त माध्यम की तरह देखते हैं साड़ियाँ एक ऐसे परिधान के रूप्प में विकसित हो रहीं हैं,साथ हीं विकश्ति होगी होगी की विश्व के बाजार मों इसका बिजनेस शुरू करके हजारों आत्मनिर्भर बन चुकें और आनेवाले समय में भी विश्व में लाखों महिलाएं इस परिधान से वो सम्मान पा सकेंगी जिसकी वो हकदार हैं।

सन्दर्भ

1. संग्रहील प्रति मूल से 1 नवंबर 2012 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 10 फरवरी 2017.
2. संग्रहील प्रति मूल से 28 जनवरी 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 10 फरवरी 2017.
3. संग्रहील प्रति मूल 12 जनवरी 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 10 फरवरी 2017.
4. संग्रहील प्रति मूल से 25 मई 2012 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 10 फरवरी 2017.
5. संग्रहील प्रति मूल से 4 मार्च 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 10 फरवरी 2017.
6. संग्रहील प्रति मूल से 1 नवंबर 2012 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 10 फरवरी 2017.
7. Historyindian Sareesaree
8. SendShare3260Tweet2038